International Indexed,Refereed,Research Journal, ISSN-2250-253X,(Print), E-ISSN-2320-544X, Issue-9,Vol.-I, Sept,2013

शोध पत्र- हिन्दी

लालदासी पंथ: साहित्य और सिद्धान्त

* डॉ. शर्मिला यादव

* प्राध्यापिका, हिन्दी विभाग, डी. ए. वी. स्नात्तकोत्तर महाविद्यालय, करनाला (हरियाणा)

भारत की धरती पर संत, महात्मा, पीर, पैगम्बर जन्म लेते रहे हैं और समाज को रास्ता दिखाते रहे हैं। ये महापुरुष समाज की कमियों को दूर करके उसे एक नई दिशा देते रहे हैं। पन्द्रहवीं शताब्दी के ऐसे ही संत लालदास ने समाज में हर तरह के भेदभाव व छुआछूत मिटाने में अपना जीवन व्यतीत कर दिया। वे जहाँ एक ओर हिन्दुओं के लिए पूजनीय थे, वहाँ दूसरी ओर मुसलमान (मेव) भी उन्हें पीर का दर्जा देते हैं। लालदासी पंथ के प्रवर्तक संत लालदास थे। संत लालदास का प्रामाणिक जीवनवृत्त उनके शिष्य डूंगरसी द्वारा रचित 'लालदास जी की वाणी' (नुक्ता) में प्राप्त होता है। संत लालदास का जन्म श्रावण कृष्णा पंचमी संवत् 1597 में राजस्थान के अलवर जिले के धोलीदूब नामक ग्राम में हुआ था। भक्त डूंगरसी ने स्पष्ट लिखा है-

भरत खण्ड तहँ उत्तम ठाँव, धोलीदूब नाना को गाँव।।
संवत पन्द्रह सौ सत्तानवे, लाल लियो अवतार।।[1]

डूँगरसी की भाँति आचार्य परशुराम चतुर्वेदी[2], डॉ. त्रिलोकी नारायण दीक्षित[3] और डॉ. रामकुमार वर्मा[4] भी उक्त मत के समर्थक हैं।

लालदास की माता का नाम समदा और पिता का नाम चाँदमल था। यह कहा जाता है कि लालदास ने जन्म लेते ही माता से बातें की थीं। इनके इस प्रकार के आश्चर्यपूर्ण व्यक्तित्व को देखकर स्वयं माता-पिता को आश्चर्य हुआ और वे लालदास को अवतार समझने लगे। भक्त डूंगरसी ने लिखा है-

पिता चाँदमल समुदा माय, जिनकौ कूख अवतरे आय।
मात-पिता मन माहिं विचारी। पुत्र नहीं कोऊ है अवतारी।
मात-पिता मन कीन्हों सोच। देखत दरस पाप गये मोच।[5]

संत लालदास का जन्म मेव जाति में हुआ था। इनके माता-पिता निर्धन थे। अत: बाल्यावस्था में अपने परिवार का आर्थिक संकट दूर करने के लिए वे जंगल से लकड़ियाँ काटकर अलवर शहर में बेचने जाया करते थे। उनके शिष्य डूंगरसी ने इस तथ्य की पुष्टि की है-

जाति कहन को कहिये मेव। लकड़ी बेचें कोई लेव।
नित अलवरगढ़ बेचन जावं। उद्यम करिकर उदर भराव।।[6]

संत लालदास विवाहित थे। उनकी पत्नी का नाम 'भोगरी' था। भक्त लोग इन्हें 'माई भोगरी' कहते हैं। इनके पहाड़ा नामक पुत्र तथा सरूपा नामक पुत्री होने का उल्लेख मिलता है। कहा जाता है कि इनके पुत्र-पुत्री आगे चलकर भक्ति में लीन होकर भक्त हो गए।

लालदासजी कबीर की भाँति फक्कड़ और घुमक्कड़ प्रकृति के थे। उन्होंने देश के कोने-कोने में भ्रमण किया। संत लालदास का देहांत संवत् 1705 में हुआ। इनका शव भरतपुर राज्य के अन्तर्गत नंगला गाँव में समाधिस्थ किया गया। इस स्थान को इस पंथ के अनुयायी तीर्थ-स्थान की भाँति पवित्र मानते हैं।

शिष्य परम्परा :

संत लालदास के जीवनलाल में तो कोई उनकी गद्दी पर नहीं बैठा किन्तु उनकी मृत्यु के पश्चात् उनके पंथ के शिष्यों ने इस परम्परा को प्रारम्भ कर दिया। उनकी गद्दी पर बैठने वाले संतों को 'महन्त' कहा जाता है। उनकी गद्दी पर अब तक 12 महन्त बैठ चुके हैं, उनके नाम इस प्रकार हैं-

1. लालदास 2. बेगादास, 3. मारूदास 4. निहालचंद, 5 हरिदास, 6 ठाकुरदास, 7, छानदास, 8. मलूकदास, 9 चन्दनदास, 10. बालकदास, 11. गरीबदास, 12. धर्मदास। उक्त महन्तों के अतिरिक्त उनके और भी शिष्य हुए हैं, जिनमें ठाकरसी, प्राणसाध, नत्थूसाध, हरजनसाध, सूरसाध आदि के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। इन शिष्यों ने अनेक सुंदर भजनों की रचना की है जिनमें लालदासजी की स्तुति की गई है।

लालदासी पंथ की विचारधारा :

लालदासी पंथ के प्रवर्त्तक संत लालदास की वाणी में मानवीय संवेदना और आध्यात्मिक चेतना का सुंदर समन्वय हुआ है। उन्होंने उपदेश देते समय कहा है कि इस संसार में मनुष्य का जीवन क्षणिक है। उन्होंने इस संसार को रात्रि के स्वप्न के समान कहा है- यह संसार रैन को सपनो।

जिस प्रकार ओस की बूँदें मोती के समान दिखाई देती हैं, लेकिन उनका अस्तित्व क्षण-भंगुर होता है। इसी प्रकार संसार की सभी वस्तुएँ नश्वर हैं। मनुष्य का जीवन रात्रि के स्वप्न के समान है, क्योंकि रात्रि के स्वप्न में कुछ प्राप्त कर लेने पर कुछ भी प्राप्त नहीं होता। इसलिए लालदास जी जीवन की सार्थकता सिद्ध करने के लिए ईश-प्रेम का उपदेश देते हुए कहते हैं-

अरे मन राम सूँ लौ लाय।
राम नाम का सुमरन ऐसा, जन की आस मिटाय।
भजन किये सूं जीवन सुख पावे, यूँ ही जन्म गँवाय।
सुकृत सुमरन कीनो नाँही, चालो मूल गँवाय।
यह तन निशत पार न लागे, ज्यों तरुवरे की छाँव।
लालदास जी सतगुरु मिले हैं हरिचरनन चितलाय।।[7]

बाह्याडम्बर के त्याग पर बल :

संत लालदास ने सामाजिक व धार्मिक जीवन में कृत्रिमता और बाह्याडम्बर की कटु निंदा की है। इसलिए संत जी उस कृत्रिमता को त्यागकर उस परमतत्व से लौ लगाने को कहते हैं क्योंकि इस संसार में कोई वस्तु स्थिर नहीं है। यह संसार मिथ्या है, चार दिन का खेल-

तमाशा है। लालदासजी मन को समझाते हुए कहते हैं-

मन रे यहँ कोई थिर न रहाई।
दिन चार का खेल-तमाशा, फिर सुपना हो जाई।
कहाँ गये मुनि अरु कहाँ गये जोधा पीर पैगम्बर भाई।
कहाँ गये वैद्य अरु कहाँ गये जोगी, जिसकी थाह न पाई।
अमर रहेगा नाम धनी का, जग-जजुग अविचल जाई।।[8]

मृदुभाषण :

सत्य एवं मृदु भाषण मानवीय व्यवहार के महत् आदर्श हैं। संत जी ने जीवन-व्यवहार में सत्य एवं मधुर संभाषण का उपदेश दिया है-

लालजी मुख से मीठा हो रहा, बड़ा न बोले बोल।
आशा माया तुम तजी, शुभ करनी का मोल।।[9]

कुसंगति से बचने का आग्रह :

दुर्जन की संगति विकृत मनोविकारों को जन्म देती है, जिससे मानव पतनोन्मुख हो जाता है। कुसंगति से बचने का उपदेश देते हुए संत जी ने कहा है-

लालजी कुसंग को आदर बुरो, भलो संत की त्रास।
जिन घट हर हर ऊबरे, उन घट हर प्रकाश।।[10]

गुरु महिमा :

अन्य संतों के समान संत जी ने गुरु की महिमा को स्वीकार किया है। माया-पाश से जीवात्मा को छुड़ाकर उसे ईशोन्मुख करने का वास्तविक श्रेय सतगुरु को ही है। सतगुरु की महिमा का वर्णन करते हुए संत जी कहते हैं-

लालजी गोविन्द का गुण रस भरा, पीय न सके कोय।
पीवेगा कोई सूरमा, जाकू सतगुरु भेटा होय।।[11]

आत्म संतोष :

आत्म-संतोष ही जीवन को सफल बनाने का महत्त्वपूर्ण मार्ग है। मनुष्य में कामेच्छा, तृष्णा से युक्त होने पर साधना के लिए कोई स्थान नहीं है। संत जी कहते हैं-

लालजी हर सुमर ले, कहाँ रहा तू भूल।
निकल जायेगी वासना, बिगस जायेगा फूल।।[12]

सत्य की गरिमा :

धर्म ग्रन्थों में सत्य को ईश्वर स्वरूप माना गया है। सत्य-व्यवहार से आत्मा शुद्ध होती है। संत जी ने सत्य को न छोड़ने के लिए कहा है-

लालजी मत छोड़े सत शूरमार, सत छोड़े पत जाय।
सत की बाँधी लक्ष्मी, बहुरी मिलेगी आय।।[13]

राम नाम स्मरण :

वस्तुत: रामनाम स्मरण से सहज, संसार-सागर को पार करने का कोई मार्ग नहीं है। इस सौदे में घाटा होने का कभी डर नहीं है-

लालजी तुम रंग राचै रामस्यु, आठ पहर को मंड।
सुमरन का सौदा नहिं, भावौ निरष देषि नौ खंड।।[14]

समन्वय की भावना :

संत लालदास के मतानुसार हिन्दू-मुसलमान दोनों में एक तत्त्व की प्रधानता है। संत जी कहते हैं-

हींदु तुरको बेक ही साहिब, दुबधा दोजग जाई।
झूठी काया झूठी माया, झूठी जगत की बड़ाई।
सगा सोदरा सब ही झूठा, हरि बुधि कीनहु न पाई।
गावै लाल निरंजन प्यारो, गाफल दुनिया चेत चीताई।।[15]

पाँच कुराहें :

संत जी ने पतन की पाँच कुराहें मानी हैं-चोरी करना, परनारी आसक्ति, किसी का बुरा सोचना, ब्याज लेना तथा पर स्त्री गमन। यदि मनुष्य इनसे मुँह मोड़ ले तो कृपालु भगवान उसका उद्धार कर दें। अपने मन को वश में करने तथा नेकी चलाई के रास्ते पर चलने का आग्रह करते हैं। संत जी चेतावनी देते हुए कहते हैं कि -

मन का कहा न कीजिए, मन है मोटा दूत।
जाय पड़ै दरीयान में, गया हाथ सूँ छूट।।[16]

लालदासी सम्प्रदाय के दार्शनिक सिद्धान्त :

संत साहित्य की मूल चेतना दर्शन से सम्पृक्त है। अन्य संतों की भाँति लालदास जी ने ब्रह्म, माया, जीव, जगत का दार्शनिक परिप्रेक्ष्य में वर्णन किया है। संत जी की वाणी पर उपनिषदों, सिद्धों, नाथों और सूफ़ियों की विचारधारा का प्रभाव देखा जा सकता है।

ब्रह्म निरुपण:

संत लालदास जी का ब्रह्म सर्वव्यापक है। वे एक ब्रह्म तत्त्व को ही सार मानते हुए तीनों लोकों में उसकी सर्वव्यापकता पर प्रकाश डालते हुए कहते हैं कि-

लालजी तीन लोक जग जीव में, कोई नहीं सरदार।
करनी सूँ छोटे चले, एक ब्रह्म तत्त्व सार।।[17]

ब्रह्म अखंड और निराकार है। इसलिए वह प्रत्येक हृदय में निवास करता है। वे ब्रह्म को सबसे बड़ा मानते हुए कहते हैं-

लालजी सबन बड़ेरा नाम है, सो तुम लीना ढूंढ।
और बड़े जितने हुए, यार गये, सब मूँड।।[18]

लालदास ने ब्रह्म के अनेक नामों का उल्लेख किया है। यथा- राम, हरि, साहिब, नदनगोपाल, स्यामसुंदर, नारायण, लाल, सांई, पीव, दयाल, पैदागर, अगा, गोविन्द, खुदा, निरंजन, साजन, सारंगधर, गोविंद, सतरान, सतगुर, धरनीधर, गरीबनवाज आदि।

ब्रह्म घट-घट वासी हैं। वह सदैव मन-मन्दिर में विराजमान रहता है। लालजी कहते हैं-

लालजी मन की दाना दीजिए, धरिये चारू आग।
राम तुम्हारे घट बसै, मंदर रहै विराज।।[19]

माया :

दर्शन के अनुसार असीम को सीमा में बाँधने वाली वस्तु का नाम माया है। ब्रह्म और जीव एक ही वस्तु के दो नाम हैं। ब्रह्म पर आवरण डालने वाली वस्तु का नाम माया है। लाल जी का मत है कि धन-यौवन का घमण्ड नहीं करना चाहिए क्योंकि यह जीवन चार दिन का खेल है। मनुष्य माया के आवरण के कारण इन बंधनों में फंस जाता है। संत जी का मत है- लाल जी धन जोबन दिन चार को, झूठी जगत की आस।

हरिदास हर भजन कर, हरदम हर विश्वास।।[20]
जपले राम की बड़ाई, मेरा मन सुंदर श्याम की बड़ाई।
झूठी काया, झूठी माया, झूठी जगत बड़ाई।।[21]

जीव :

जगतगुरु शंकराचार्य ने अंत:करण के द्वारा अविच्छिन्न चैतन्य को 'जीव' की संज्ञा प्रदान की है। उन्होंने शरीर तथा ऐन्द्रिय समूह के ऊपर शासन करने वाले तथा कर्मों का फल भोगने वाले आत्म को 'जीव' बतलाया है। उनके मत में जीव चैतन्य स्वरूप है। लालदासजी कहते हैं कि जीव वस्तुत: ब्रह्म का ही एक रूप है किन्तु माया से आच्छन्न हो जाने के कारण ब्रह्म से अत्यंत दूर हो जाता है। कवि का कथन है-

घर-घर व्यापक रम रहा, काहु दीखे नांहि।
दीखने को दूर नहीं, देखो ध्यान लगाहिं।।[22]

जगत :

संत लालदास ने जगत को मिथ्या कहा है। इस संसार में दिखाई देने वाली सभी वस्तुएँ माया के रूप में हैं। मनुष्य इन्हें सत्य मानकर मोहपाश में फँसा हुआ है। संतों ने इसे मिथ्या बताते हुए ब्रह्म के प्रति भक्ति का उपदेश दिया है। जगत का वास्तविक चित्र प्रस्तुत करते हुए लालदास कहते हैं-

लालजी इक आवत इक जात है, लाग रही है लार।
हर के सुमरण या हरी, वही जाय संसार।।[23]

निष्कर्षत:

कहा जा सकता है कि उत्तरभारत की संत परम्परा में संत लालदास का महत्वपूर्ण स्थान है। लालदासी पंथ में संत लालदास की वाणी का उतना ही आदर है जितना कबीर पंथियों में संत कबीर का। संत जी भावुक संत थे। उनकी वाणी भाव विह्वल कर देने वाली है। उनकी वाणी गंभीर तात्विक एवं दार्शनिक चिन्तन से ओतप्रोत है। उनकी वाणी में लोक व्यवहार व भक्ति का सुंदर समन्वय हुआ है। संत लालदास को कबीर, दादू, रैदास, नानक आदि संत कवियों की परम्परा में रखा जा सकता है। उनमें कबीर की सी घुमक्कड़ता, रैदास की सी दीनता, दादू की सी फक्कड़ता, नानक की सरलता दिखाई देती है। मेवात अंचल के लोगों के हृदय में लालदास के प्रति अटूट श्रद्धा व भक्ति है। उनके नाम पर देश में चौबीस मंदिर बने हुए हैं। संत लालदास की वाणी केवल पंथानुयायियों के लिए ही नहीं वरन् मानव मात्र के लिए अमूल्य देन है। उनकी वाणी भक्तों के लिए पंचामृत तथा साहित्य प्रेमियों के लिए अमृतधारा है। लालदासी सम्प्रदाय का साहित्य पीड़ितों में आशा जगाने वाला तथा संतप्तों को शांति प्रदान करने वाला है।

संदर्भ ग्रंथ

1. लालदास की वाणी, पृ. 5
2. उत्तरी भारत की संत परम्परा, पृ. 484
3. हिन्दी संत साहित्य, पृ. 60
4. हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास, पृ. 230
5. लालदास की वाणी, पृ. 4-5
6. लालदास की वाणी, पृ. 6
7. लालदास की वाणी, पृ. 105
8. वही, पृ. 170
9. वही, पृ. 17
10. वही, पृ. 28
11. वही, पृ. 34
12. वही, पृ. 35
13. वही, पृ. 37
14. वही, पृ. 143
15. वही, पृ. 19
16. वही, पृ. 17
17. वही, पृ. 78
18. वही, पृ. 66
19. वही, पृ. 126
20. वही, पृ. 128
21. वही, पृ. 130
22. वही, पृ. 140
23. वही, पृ. 142